अध्याय 13

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ अपने द्वारा परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	आराधना (20 मिनट) *[परमेश्वर की विशेषताएं]* परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर व उद्धारकर्ता है।

परिभाषा

सिखाए. आराधना क्या है? आराधना की परिभाषा निम्नलिखित है:

आराधना: परमेश्वर का भय मानने वाला, उसकी प्रशसां करने वाला, उसके प्रति अधीन व समर्पित भाव है, जो हमारी विविध प्रार्थनाओं और हमारी दिनचर्या प्रगट होता है।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि परमेश्वर कौन है। आराधना के प्रत्येक समय में हम परमेश्वर की एक विशेषता को सीखते हैं।

ध्यान करना.

इस सन्दर्भ में शिक्षा दें या पढ़ें कि 'बाइबल का परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर व उद्धारकर्ता है'।

निम्नलिखित आयतों को पढ़ें एवं समझाएं तथा इन वचनों के आधार पर समूह को आराधना करने के लिए कहें।

1. **निर्गमन 20:2–3**, परमेश्वर ने सारी मानवजाति को अपने अलावा किसी दूसरे को ईश्वर मानकर उपासना करने के लिए मना किया। यहोवा परमेश्वर ही परमेश्वर है जिसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया। वही लोगों को पाप के घर और गुलामी से बचाने वाला है।
2. **यशायाह 9: 6–7.** परमेश्वर ने यीशु मसीह के रूप में मानव रूप धारण किया(2 कुरिन्थियों 1:3 'यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर" का अर्थ है "पिता व परमेश्वर जिसने मसीह यीशु में होकर अपने आप को प्रगट किया)"। तुलना करें: परमेश्वर स्वयं को आग की लपटों में होकर प्रगट करता है तथा परमेश्वर के दूत के बीच(निर्गमन 3:2; 19:18)
3. **यशायाह 40:18.** परमेश्वर अतुल्य है। दूसरे ईश्वरों या देवी देवताओं की तुलना परमेश्वर से नहीं की जा सकती।
4. **यशायाह 42:8.** परमेश्वर किसी भी अन्य धर्म के देवता या ईश्वर के साथ अपनी महिमा (उसके ईश्वरीय गुणों तथा उपस्थिति) को साझा नहीं करेगा।
5. **यशायाह 43:10 बा–11.** यहोवा परमेश्वर, जिसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है, एकमात्र जीवता परमेश्वर है। उस परमेश्वर को छोड़ और कोई हमारा उद्धारकर्ता नहीं है।
6. **यशायाह 44:6–8.** परमेश्वर आदि से अन्त तक सदैव विद्यमान रहने वाला परमेश्वर है। उसको छोड़ और कोई देवता अनादि काल से विद्यमान नहीं है। हालांकि इस संसार में बहुत सी दुष्ट शक्तियों ने अपने आप को ईश्वर होने का दावा किया है परन्तु न तो वे कभी भूतकाल की बातों को प्रगट कर पाए और न वे यह बता सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है।
7. **यशायाह 45:18–21.** परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है और उसके तुल्य कोई नहीं। परमेश्वर ने गुप्त में कोई बात नहीं की। बल्कि, परमेश्वर ने 1500 वर्षों के दौरान एक ही संदेश को 40 अलग अलग भविष्यवक्ताओं व प्रेरितों के पास पहुंचाया। वही परमेश्वर है जिसने जगत की सभी बड़ी घटनाओं के घटने से पहले उनके होने की सूचना दे दी थी।
8. **यशायाह 45:21–23.** यहोवा परमेश्वर को छोड़कर और कोई जीवता परमेश्वर नहीं है। इसलिए,संसार के सभी अन्य धर्मों के ईश्वरों में से कोई भी सच्चा परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर को छोड़कर कोई भी धर्मी व उद्धारकर्ता परमेश्वर नहीं है। अतः दूसरे धर्मों के देवी देवताओं या ईश्वरों में से कोई भी धार्मिक या उद्धारकर्ता नहीं है। इस कारण संसार के सभी लोगों को परमेश्वर की ओर फिर कर उद्धार पाना चाहिए। अन्त में, सारे जगत के लोगों के घुटने स्वेच्छा से या इच्छा के विरूद्ध उसके सामने टिकेगें। और हर एक जुबान निरूत्तर होकर या पछतावे के साथ यह अंगीकार करेगी कि जिस परमेश्वर ने अपने आप को यीशु मसीह में होकर प्रगट किया है वह ही सच्चा परमेश्वर है (फिलिप्पियों 2:9–11)।

आराधना.

समूह के सभी सदस्यों से आराधना करने के लिए अपनी बाइबल की आयत का इस्तेमाल करने के लिए कहें।

एकमात्र परमेश्वर व एकमात्र उद्धारकर्ता होने के लिए परमेश्वर की आराधना करें। आपका परमेश्वर व उद्धारकर्ता होने के लिए परमेश्वर की आराधना करें।

परमेश्वर की आराधना बड़े समूह में या फिर कम से कम तीन लोगों के समूह में करें।

3	बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]* यूहन्ना 15:1– 18:27

अपनी बारी आने पर संक्षेप में बताएं कि आपने दिये गये वचनों के आधार परमेश्वर के साथ एकान्त में समय बिताने पर क्या सीखा। (यूहन्ना 15:1 से 18:27)।

जब कोई व्यक्ति अपने अनुभव को बाँट रहा हो तो उसे गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	सिखाना (70 मिनट) *[फल लाना]* सुसमाचार व अपनी गवाही को बाँटना

इस शिक्षा में आप पहले सुसमाचार के संदेश को समझेगें और फिर उसे दूसरों में बाँटना सीखेगें। इसके अलावा इस भाग में आपको अपनी उद्धार की गवाही को दूसरों में बांटना भी सिखाया जाएगा।

क. सुसमाचार का संदेश

सुसमाचार के संदेश का अभिप्राय परमेश्वर की योजना, अर्थात मनुष्य की समस्या व परमेश्वर ने उसकी समस्या का किस तरह समाधान किया, से है। मनुष्यों की समस्याओं के लिए परमेश्वर का समाधान यीशु मसीह है। परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह में उद्धार पाने के लिए प्रतिउत्तर दें।

1. जीवन के सेतू का दृष्टान्तः

सिखाएं व प्रशिक्षित करें। विद्यार्थियों की जीवन के सेतू का दृष्टान्त समझने व उसे याद करने में सहायता करें। उसके पश्चात जब वे किसी के साथ सुसमाचार बांटते हैं तो उन्हें इस दृष्टान्त को इस्तेमाल करना सिखाएं।

बाइबल के पदों के एक एक करके ***पढ़ें।***

खोजें व चर्चा करें. (1) **परमेश्वर** के बारे में सच्चाई। (2) **मनुष्य** के बारे में सच्चाई । (3) **मसीह** के बारे में सच्चाई (4) **उद्धार** के बारे में सच्चाई (5) **मसीही व्यक्ति के नये जीवन** के बारे में सच्चाई।

(1) परमेश्वर की योजना

रोमियों 1:19–20 परमेश्वर ने अपने आप को प्रगट किया। आप परमेश्वर को जान सकते हैं।

1 यूहन्ना 1:5–6 परमेश्वर ज्योति है। यदि आप परमेश्वर को जानना चाहते हैं तो उसकी ज्योति में आयें।

1यूहन्ना 4:8 परमेश्वर प्रेम है। यदि आप परमेश्वर का अनुभव करना चाहते हैं, तो परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करें तथा दूसरों को प्रेम करें।

उत्पत्ति 1:27 परमेश्वर ने आपको परमेश्वर की गुणों को धारित करने के लिए बनाया ना की शैतान के।

यशायाह 43:7 परमेश्वर ने आपको उसके लिए जीवित रहने के उद्देश्य से बनाया, आपके लिए नहीं।

मनुष्य — **पाप** — **परमेश्वर**

परमेश्वर तक पहुंचने के लिए **मसीह** एक **सेतू** है

(II) <u>मनुष्य की समस्याएं (परिस्थितियां)</u>

6. यशायाह 59:1–2
पाप आपको परमेश्वर से अलग करता है ।

7. रोमियों 1:18,28–32
पाप ईश्वररहित व दुष्टतापूर्ण जीवन है

8.रोमियो 6:23
पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है

9.इब्रानियों 9: 27
मृत्यु के पश्चात न्याय होता है

10.रोमियों 3:23
सबने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये है।

(III) <u>मनुष्यों की समस्याओं के लिए परमेश्वर का समाधान यीशु मसीह है।</u>

11.रोमियो 5:8
परमेश्वर का प्रेम मसीह की मृत्यु में होकर प्रगट हुआ (आपके पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए)

12. 1 पतरस 2:24
मसीह आपके पापों को दूर करने के लिए मरा (आपको धर्मी ठहराने के लिए)

13. 1 पतरस 3:18
मसीह परमेश्वर से आपका मिलाप कराने के लिए मरा (परमेश्वर से मिलाप कराने के लिए)

14.रोमियो 6:4–5.
मसीह वर्तमान काल में आपको नया जीवन प्रदान करने के लिए(आपको पवित्र करने के लिए) और मृत्यु पश्चात आपको मुर्दो में से जीवित करने के लिए मरा(आपको महिमा प्रदान करने के लिए)

15. इफिसियों 2:8–9
आपके भले काम आपका उद्धार नहीं कर सकते।

(IV) परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह में उद्धार पाने के लिए प्रतिउत्तर दें।

16. यूहन्ना 5:24

- जो कोई <u>सुनकर विश्वास</u> करता है
- उसके पास अनन्त जीवन है।
- दण्डित नहीं होगा।
- मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

17.यूहन्ना 1:10–13
जिसने मसीह को स्वीकार किया है व परमेश्वर की नया जन्म पायी हुई सन्तान है।

18. रोमियो 10:9–13
प्रार्थना में अपने मन में विश्वास करो तथा अपने मुँह से अंगीकार करो।

प्रार्थना
हे प्रभु यीशु मसीह,
–मैं अंगीकार करता हूँ कि मैं एक भटका हुआ पापी मनुष्य हूँ।
–मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पाप का मूल्य चुकाने के लिए मरे और मुझे अनन्त जीवन देने के लिए मृतकों में से जीवित हो गये।
–मैं आपको पुकारते हुए प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे जीवन और हृदय में आईये ।
–मैं अपने मुँह से आपको अपना उद्धारकर्ता व प्रभु स्वीकार करता हूँ। यीशु के नाम से आमीन!

(V) परिणाम : मसीहियों को नया जीवन

19. यूहन्ना 10:27–28	अब से –आप परमेश्वर के वचनों को सुनते और यीशु का अनुसरण करते हैं। – –मसीह से आपको यह निश्चय प्राप्त होता है कि कोई भी आपको उसके हाथों से छीन नहीं सकता है।
20. यूहन्ना 10:7–10:	मसीह आपको एक बहुतायत का जीवन प्रदान करेगा।

2.कठिन शब्दों का अर्थ:

आपके पापों के लिए पश्चाताप करने का अर्थ है कि आपके विरूद्ध परमेश्वर के धार्मिक क्रोध को समाप्त करना। मसीह की मृत्यु आपके लिए एक प्रायश्चित का बलिदान है, अर्थात ऐसा बलिदान जो आपके प्रति भड़के परमेश्वर के प्रेम को दूर का करता है। (रोमियों 3:25)

धर्मी ठहराना आपको धर्मी ठहराना एक कानूनी वाक्य है जो इस बात की घोषणा करता है कि आप परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हैं। क्रूस पर मसीह ने आपकी अधर्मिकता को अपने ऊपर लेकर, आपको अपनी धर्मिकता प्रदान की है (2कुरिन्थियों 5:21) धर्मिक व्यक्ति के रूप में आप परमेश्वर के सामने क्षमा प्राप्त व परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध धारित व्यक्ति के रूप में खड़े होते हैं यह कार्य आपके विश्वास करते ही हो जाता है। उसी क्षण से परमेश्वर आपको पूर्ण रूप से धर्मिक व्यक्ति मानकर व्यवहार करने लगते हैं।

परमेश्वर से आपका मेल कराने का अर्थ, परमेश्वर के क्रोध को दूर करके अपनी जीवन शैली को पुनः बहाल करना है (भजन 5:4–5;11:5)आपके विश्वास करते ही, परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में शान्ति आ जाती है, और आप अपने मन व हृदय में शान्ति का अनुभव कर सकते हैं (रोमिययों 5:19, फिलिप्पियों 4:37)।

आपका शुद्धिकरण करने का अर्थ, आपको यीशु मसीह की समानता में ज़्यादा से ज़्यादा बदलना है (1कुरिन्थियों 3:18) यह प्रक्रिया आपके सम्पूर्ण मसीही जीवनकाल में बनी रहती है।

आपको महिमित करने का अर्थ, आपको यीशु के स्वरूप में बदलना है (1यूहन्ना 3:2)। इसमें आपकी वर्तमान देह में परिवर्तन, शामिल हैं, जो मसीही के देह के समान महिमित देह बन जाएगी (फिलिप्पियों 3:21)। यह घटना मसीह के पुनः आगमन पर होगी।

3) सुसमाचार के सन्देश का अल्प स्वरूप

आप मैनुएल1, के अध्याय 3 के आधार पर अपने समूह के सदस्यों को सुसामाचार बांटना सिखा सकते हैं।

ख. सुसमाचार के सन्देश को बाँटना

1. व्यवहारिक सुझाव

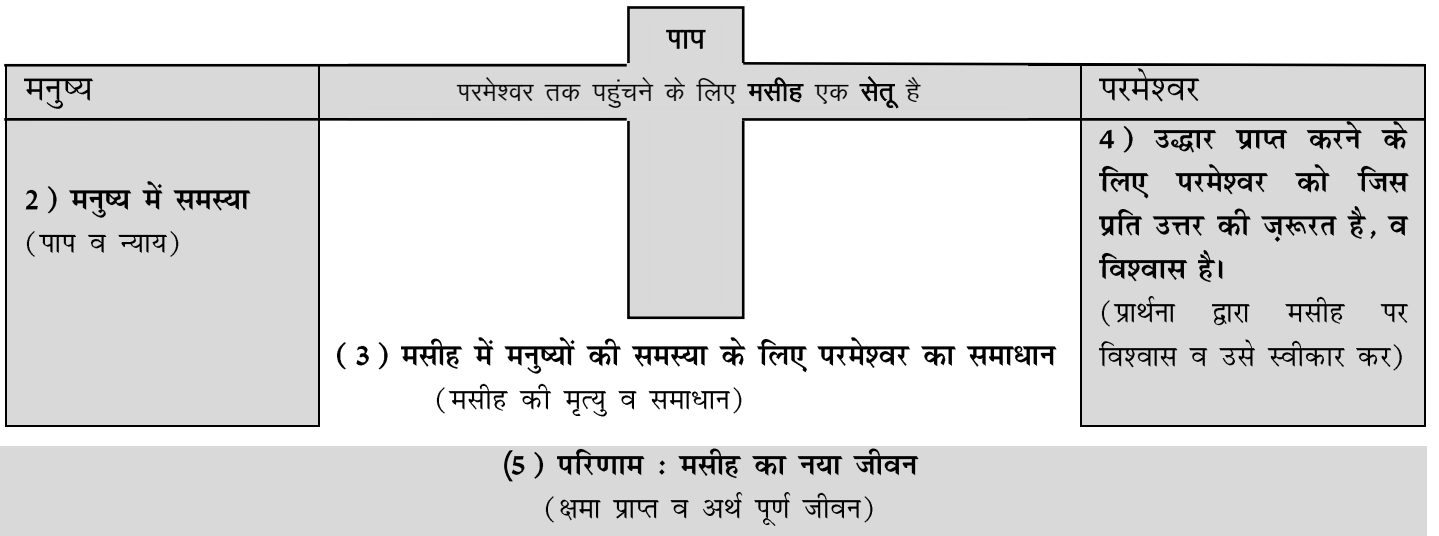
सुसमाचार परमेश्वर, का शुभ सामाचार है

- इसका सम्बन्ध परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह व प्रधानता से है।
- इसका सम्बन्ध मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान तथा सिंहासन पर विराजमान होने से है।
- इसका सम्बन्ध हर एक विश्वास करने वाले को क्षमा, उद्धार व विजय प्रदान करने से है।

सुसमाचार के सन्देश को पाँच चरणों में बाँटें।

आप जब कभी प्रचार करते सिखाते, अपने विचार बाँटते या वर्णन करते समय, निम्नलिखित पाँच चरणों का इस्तेमाल कर सकते हैं:

(1) परमेश्वर की योजना
(परमेश्वर पवित्र व प्रेम है)



(5) परिणाम : मसीह का नया जीवन
(क्षमा प्राप्त व अर्थ पूर्ण जीवन)

व्यक्ति की अपने आप सत्य खोजने में मदद करें:

- होने दें की गैर मसीही व्यक्ति बाइबल से सुसमाचार की व्याख्या करने वाले पद को पढ़ें।
- निम्नलिखित प्रश्नों को पूछने के द्वारा उस व्यक्ति को अपने आप सच्चाईयाँ खोजने के लिए प्रोत्साहित करें:
  –यह बाइबल पद परमेश्वर के बारे में क्या कह रहा है?
  –पाप के क्या परिणाम हैं?
  –यीशु के लिए क्यों मरना ज़रूरी था?
  –यीशु के अनुसार, आपको उद्धार पाने के लिए क्या करने की ज़रूरत है?
  –मसीही जन की क्या ज़िम्मेदारियाँ व अवसर हैं?
- खोज व चर्चा में आगे बढ़ते हुए ''जीनव का सेतू के दृष्टान्त पर'' चिन्तन करें।
- जैसे जैसे चर्चा आगे बढ़ती है, पदों व मुख्य शब्दों को लिखें ।
- अन्त में उसे सुसमाचार स्मरण कराने के लिए,यह दृष्टान्त बताएं ।

उस व्यक्ति को यीशु को स्वीकार करने का निमन्त्रण दें।

जीवन का सेतू दृष्टान्त की व्याख्या करने के पश्चात, उस व्यक्ति को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करने का न्योता दें या यीशु को अपना राजा मानते हुए अपना जीवन उसके हाथों में सौप दें। यदि वह व्यक्ति इच्छुक हो तो उसे प्रार्थना करने दें।

परमेश्वर की आत्मा के प्रति संवेदनशील बनें
सुसमाचार बाँटते समय अपने हृदय में प्रार्थना करें। याद रखें कि आप केवल परमेश्वर के दास हैं। केवल परमेश्वर ही उसके जीवन को नया बना सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर द्वारा उस व्यक्ति के जीवन में किये जाने वाले कार्य के प्रति संवेदनशील बने।

2. सुसमाचार बाँटने का अभ्यास करें।

- होने दें कि समूह के सदस्य सुसमाचार के छोटे रूप को (12 पद के) आपस में बाँटने का अभ्यास करें। मैनुएल 1, अध्याय 3 को देखें।
- होने दें कि दो दो करके समूह के सदस्य आपस में जीवन के सेतू के दृष्टान्त (20 पद) की व्याख्या करें।
- होने दें कि यूहन्ना 110:7–18 इफिसियों 2:17–10 में से किसी एक का इस्तेमाल करते हुए समूह के लोग आपस में दो दो करके सुसमाचार बाँटे।

ग. अपने उद्धार की गवाही बाँटे

कोई भी जन "मसीही" पैदा नहीं होता। "आपको नया जन्म पाना ज़रूरी है" (यूहन्ना 3:3–8)
लेकिन नया जन्म कब, और कैसे होता है, इस संदर्भ में सबकी अपनी अलग कहानी है।
किसी को अपने मसीही अनुभव को बताना, एक व्यक्तिगत उद्धार की गवाही कहलाती है।

1. पौलुस के उद्धार की गवाही

पौलुस अपने उद्धार की गवाही को किस प्रकार बाँटता है?

पढ़ें प्रेरितों 26:1–29

पौलुस ने अपनी उद्धार की गवाही को चार भागों में बाँट दिया:

- परिचय (प्रेरितों 26:1–29)
- उसके जीवन परिवर्तन से पूर्व समय (प्रेरितों 26:4–11)
- उसके मन परिवर्तन की घटना (प्रेरितों 26:12–18)
- उसके मन परिवर्तन के बाद का समय (प्ररितों 26 :19–23)

(1) परिचय (प्ररितों 26:1-3)

- जब पौलुस को यीशु मसीह में उसके विश्वास को बताने का अवसर प्रदान किया गया, तो उसने अपनी उद्धार की गवाही बाँटी।
- उसने सबसे पहले अपने श्रोताओं के साथ मित्राता की (पद 2–3)

(2) उसके जीवन परिवर्तन से पूर्व समय (प्रेरितों 26:4-11)

- पौलुस अपने श्रोता को अपने साथ जुड़ने में सहायता करने के लिए अपनी पृष्ठभूमि के बारे में बताता है।
- पौलुस अपने पुराने जीवन के कुछ अच्छे पहलुओं के बारे में चर्चा करता है। (उसकी उच्च स्तरीय शिक्षा, उसकी धर्मिक लगन तथा सच्चे लक्ष्य)
- पौलुस ने अपने जीवन के नाकारात्मक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है (उसके द्वारा मसीहीयों को सताव, तथा मसीहि कलीसियों के विरूद्ध उसका उपद्रव करना है)
- पौलुस ने ऐसे विषयों पर भी चर्चा की जो उसके श्रोतागण समझ सके। उसने तर्क वितर्क के लिए माहौल बनाया (फरीसी लोग पुनरूत्थान की बातों में इच्छुक थें) और राजा यहूदियों की विरोधभास बातों व रीतियों में रूचि रखता था । उसने अपने समान समस्याओं का सामना करने वाले श्रोतागणों को यह बताते हुए यह सहायता की कि उसे इसका जवाब कैसे मिला।

(3) उसके मन परिवर्तन की घटना (प्रेरितों 26:12-18)

- पौलुस ने कभी "मैं सोचता हूँ" या "मैं महसूस करता हूँ" नहीं कहा, बल्कि वह दृढ़ता के साथ अपने मन परिवर्तन की घटना का बखान करता है।
- पौलुस स्पष्ट बताता है कि उसने परमेश्वर को नहीं, परन्तु खुद परमेश्वर ने उसे खोजा और पा लिया। पौलुस स्पष्ट बताता है कि मसीह ने खुद को उस पर प्रगट किया, लेकिन उसके जीवन को शुरू करने के बाद नहीं, बल्कि उस समय उसका जीवन बुरी तरह गड़बडियों में फंसा हुआ था।
- पौलुस हमेशा यीशु द्वारा कहे गये कथनों को दोहराता है। वह अपनी गवाही में सुसमाचार में बहुत से तत्वों को शामिल करता है। ;लोगों को अन्धकार से ज्योति की ओर, शैतान से परमेश्वर की ओर, फिरना चाहिएः लोगों को यीशु पर विश्वास करना चाहिए, विश्वासियों को पापों की क्षमा, परमेश्वर के लोगो के बीच स्थान प्राप्त होगा (पद 18)। उसके द्वारा चाहने पर श्रोतागणों को यीशु पर विश्वास करने में सहायता हुई।

4) उसके मन परिवर्तन के बाद का समय (प्रेरितों 26:19-23)

- पौलुस अपने जीवन के सबसे बड़ा बदलाव का वर्णन करता है (उदाहरण : मसीही कलीसियाओं को सताने वाला अब कलीसियाओं को प्रचार करने वाला बन गया है)। "उसके विचार" उसके मन परिवर्तन से पहले व मन परिवर्तन के बाद की दशा का वर्णन करते हैं।
- पौलुस स्वीकार करता है कि वह आज भी कठिन परिस्थितियों का सामना करता है। लेकिन वह यह भी कहता है कि परमेश्वर उसकी सारी कठिनाइयों में सहायता करता है।
- पौलुस अधिकार के साथ बाइबल की आयतों का इस्तेमाल करता है।

- पौलुस अपने उद्धार की गवाही में सुसमाचार के अनेक तत्वों को शामिल करता है। (यीशु मरा और मुर्दो में से जीवित हो गया! सुसमाचार सभी लोगों के लिए है, पहले यहूदियों और फिर यूनानियों के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पश्चाताप करना व परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए अतः प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञाकारी मसीही जीवन व्यतीत करना चाहिए, जिसमें वे अपने कामों द्वारा अपने विश्वास को साबित करते हैं) (पद 23:20)।

2. पौलुस के उद्धार की गवाही के बाद होने वाली चर्चा:

- **पौलुस अभी भी सम्मानित व्यक्ति बना रहा (प्रेरित 26:24-25)**
  उसकी बेइज्जति होने पर भी, उसका सम्मान लगातार बढ़ता गया।
- **पौलुस अपने श्रोताओं के पीछे पड़ा रहा (प्रेरितों 26:26-27)**

  उसने अपने श्रोताओं को न तो धमकाया, न जोर डाला, परन्तु वह उनके पीछे पड़ा रहा ताकि वह यीशु के अनुयायी बन सकें।

- **पौलुस ने अपने श्रोताओं के सामने चुनौती पेश की (प्ररितों 26:28-29)**
  उसने अपने श्रोताओं का यीशु का अनुयायी बनने की चुनौती पेश की।

3) तीमुथियुस की सम्भव उद्धार की गवाही :

पढ़ें 1तीमुथियुस1:2, 2तीमुथियुस1:5, 3:10-15

सिखाएं . तीमुथियुस के समान बहुत से ऐसे मसीही जन हैं, जो युवावस्था में ही विश्वासी बन गये थे। हो सकता है कि उन्हें मसीही बनने का अपना अनुभव स्मरण न रहे। लेकिन वे जानते हैं कि वे यीशु मसीह के अनुयायी हैं।

- **अपनी पृष्ठ भूमि बताएं**

मसीही दादा, परदादा, अभिभावक, कलीसिया या अध्यापक के बारे में बताएं।

यीशु के बारे में बताएं

बताएं कि बीतें वर्षों में यीशु ने आपके जीवन में क्या कहा तथा इसके द्वारा आपका वर्तमान जीवन किस तरह परिवर्तित हुआ।

- **आपकी समझ के अनुसार सुसमाचार के मुख्य तत्वों को बांटें।**

कुछ तस्वीरों का इस्तेमाल करें।

4) अपनी गवाही को बाँटने का अभ्यास करें।

अपनी गवाही बाँटने के लिए एक पद्धति का चुनाव करें।

पौलुस की गवाही की पद्धति	तीमुथियुस की गवाही की पद्धति
• मसीह बनने से *पहले* के जीवन का वर्णन करें • बताएं के आप मसीही कैसे बनें। • विश्वासी बनने के उपरान्त जीवन का वर्णन (यीशु ने आपका जीवन कैसे परिवर्तन किया) • सुसमाचार सन्देश बाँटें (बाइबल से)	• विश्वासी बनने से पहले के जीवन का वर्णन करें। • मसीह के साथ अपने वर्तमान रिश्ते के मायने का वर्णन करें। • वर्णन करें कि कैसे यीशु ने आपके जीवन को परिवर्तन किया। • सुसमाचार सन्देश को बाँटें। (बाइबल)

अपनी गवाही को लिखें व बाँटें।

- किसी भी पद्धती का इस्तेमाल करते हुए अपनी गवाही को A4 आकार के पेपर पर लिखें (A5 से लेकर ज़्यादा से ज़्यादा A4 साइज़ पेपर)
- अपनी गवाही को अपने अगुवे के सामने पढ़े वे आपको सकारात्मक सुझाव दें।
- अपनी गवाही को याद कर लें।
- अपनी गवाही को छोटे समूह या घरेलू कलीसिया में बांटे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारो** (2मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति के समूह के साथ "सुसमाचार व अपनी गवाही बाँटना" को प्रचार करें। सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समयः यूहन्ना 18:28, 21:25 के आधर पर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्याय अगले बाइबल अध्ययन की घर पर तैयारी करें। 1कुरिन्थियों 13:1–13 विषयः "मसीही प्रेम की क्या विशेषता होती है? बाइबल अध्ययन के पाँचों चरणों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा सामग्री को शामिल करें।